डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा तृतीय वर्ष, पत्र – सात

माध्यमोपयोगी लेखन का स्वरूप और प्रमुख प्रकार

माध्यमोपयोगी लेखन से तात्पर्य है – जनसंचार माध्यमों हेतु लेखन, जिसे सामान्यतः मीडिया लेखन भी कहा जाता है। जनसंचार माध्यम परंपरागत और आधुनिक दो प्रकार के हैं। जब तक आधुनिक जन – संचार माध्यमों का आरंभ नहीं हुआ था हमारे पास जनसंचार के परंपरागत माध्यम ही थे। परंपरागत माध्यमों में कथा – कहानियाँ, मेले, त्यौहार, लोकगीत, लोककथा, लोकनाट्य, लोकनृत्य एवं अन्य कई प्रकार की लोककलाओं का समावेश था। कोई भी महत्वपूर्ण सूचना ढोल पीटकर नागरिकों तक पहुँचाई जाती थी।

आधुनिक माध्यमों का इतिहास लगभग दो सौ वर्ष पुराना है। इन माध्यमों की शुरुआत मुद्रण माध्यम अर्थात प्रिंट मीडिया से हुई। आगे चलकर इलेक्ट्रॉनिक माध्यम की शुरुआत हुई, जिनमें रेडियो, फ़िल्म, टेलीविजन इत्यादि शामिल हुए, आगे चलकर इसमें इंटरनेट का भी समावेश हो गया। दृश्य – श्रव्य माध्यमों में निरंतर वृद्धि होती रही। ऑडियो – वीडियो, सीडी, पेनड्राइव आदि हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गए।

माध्यमोपयोगी लेखन के स्वरूप की बात करें तो यह साहित्यिक लेखन से नितांत भिन्न होता है। साहित्यिक लेखन में वैयक्तिक अनुभव और कल्पना – शक्ति काविशेष महत्व होता है जबकि माध्यमोपयोगी लेखन किसी घटना विशेष पर आधारित होता है। साहित्यकार अपनी कल्पना शक्ति के बल पर असंभव को भी संभव रूप में चित्रित कर सकता है जबकि माध्यमोपयोगी लेखन में किसी घटना का वृत्तांत एक निश्चित अवधि में श्रोताओं, दर्शकों तथा पाठकों तक संप्रेषित करना होता है। माध्यमोपयोगी लेखन में तथ्य को प्रमुखता देते हुए सरल – सहज भाषा में लेखन करना होता है।

प्रिंट माध्यम तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम दोनों हेतु माध्यमोपयोगी लेखन करते समय तथ्यपरकता तथा बोधगम्यता का विशेष ध्यान रखना होता है।

माध्यमोपयोगी लेखन के प्रकार की बात करें तो मुख्य रूप से यह तीन प्रकार का है –

समाचार पत्र के लिए लेखन, रेडियो के लिए लेखन, टीवी तथा फिल्मों के लिए लेखन।

समाचार पत्र हेतु लेखन, जनता तक अपनी बात पहुँचाने का सबसे सशक्त और प्रभावी माध्यम है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बढ़ते प्रभाव के बावजूद समाचार पत्र पर जनता की विश्वसनीयता बनी रही। समाचार – पत्र लेखन हेतु

विशिष्ट कौशल की अपेक्षा होती है। शब्दों के प्रयोग में थोड़ी सी भी असावधानी से पूरे समाचार का अर्थ बदल जाता है। अतः समाचार – पत्र के लिए लेखन करते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है।

समाचार के साथ – साथ उसके लिए उपयुक्त शीर्षक की भी आवश्यकता होती है।

समाचार पत्र के लिए लेखन करते समय समय का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है, क्योंकि किसी समाचार को पुराना होने से पहले समाचार – पत्र में प्रकाशित होना आवश्यक होता है।

रेडियो लेखन में समाचार तो शामिल रहता है, इसके अतिरिक्त विभिन्न विषयों पर वार्ताएँ, राष्ट्रीय – अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रमों के वृत्तांत आदि। ताजातरीन समाचार एवं क्रिकेट कमेंट्री के कारण रेडियो आम जनजीवन के मध्य खास जगह बना पाया। रेडियो लेखन माध्यमोपयोगी लेखन का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रकार है।

टीवी तथा फ़िल्म लेखन

टीवी के लिए समाचार लेखन, विज्ञापन लेखन इत्यादि प्रमुखता से लिखे जाते हैं, साथ ही टीवी तथा फ़िल्म के लिए पटकथा लेखन भी माध्यमोपयोगी लेखन का महत्वपूर्ण भाग है। टीवी तथा फ़िल्म लेखन में लेखक के साथ उसकी पूरी टीम होती है। धारावाहिक के पटकथा लेखन में प्रसंगानुकूल त्यौहार आदि के दृश्य शामिल कर उसे अधिक लोकप्रिय बनाने की प्रथा भी चल पड़ी है।

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि आज संचार माध्यमों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण माध्यमोपयोगी लेखन का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। माध्यमोपयोगी लेखन में अपार सम्भावनाएँ हैं।